3. रूच (Ruch)—"सीखना व्यक्ति की प्रतिक्रिया करने के ढंग में परिवर्तन लानेवाली प्रक्रिया को कहते हैं, जो वातावरण के विविध पहलुओं के संपर्क में आने के फलस्वरूप होती है" (Learning is a process which brings about changes in the individual's way of responding as a result of contact with aspects of the environment)।

4. सार्टेन, नॉर्थ, स्ट्रेंज, चैपमैन (Sartain, North, Strange and Chapman)—"सीखने की परिभाषा व्यवहार में अनुभव या प्रयास के फलस्वरूप अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में दी जा सकती है" (Learning may be defined as the process by which a relatively enduring change in behaviour occurs as a result of experience or practice)।

5. वुडवर्थ एवं मार्कविस (Woodworth and Marquis)—"नए ज्ञान एवं नई प्रतिक्रियाओं को अर्जित करने की प्रक्रिया ही सीखने की प्रक्रिया है।"

वुडवर्थ एवं मार्कविस ने इस परिभाषा का विस्तार करते हुए आगे कहा है— "सभी प्रकार के ज्ञान एवं कौशल, सभी प्रकार की अच्छी-बुरी आदतें, मनुष्यों एवं वस्तुओं से सभी प्रकार की जान-पहचान, सभी प्रकार की मनोवृत्तियाँ जो मनुष्यों एवं वस्तुओं के साथ अंतःक्रिया के क्रम में निर्मित होती हैं, इत्यादि सभी सीखी हुई होती हैं" (The process acquiring new knowledge and new responses is the process of learning.......... All knowledge and skill, all habits good and bad, all acquaintances with people and things, all attitudes built up in our dealing with people and things—have been learnt)।

6. हिलगार्ड (Hilgard)—"सीखना वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक क्रिया की उत्पत्ति होती है, अथवा जो किसी परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया करने के कारण परिवर्तित होती है, बशर्ते कि इस प्रकार के परिवर्तन की विशेषताओं की व्याख्या जन्मजात प्रतिक्रिया, प्रवृत्तियों, परिपक्वता अथवा प्राणी की अस्थायी अवस्थाओं या स्थितियों द्वारा नहीं की जा सके" (Learning is the process by which an activity originates or is changed through reacting to an encountered situation provided that the characteristics of the change in activity cannot be explained on the basis of native response tendencies, maturation or temporary states of the organism)।

7. मॉर्गन एवं गिलिलैंड (Morgan and Gilliland)—"प्राणी के व्यवहारों में कुछ परिमार्जन जो अनुभव के फलस्वरूप होता है (जो किसी प्रकार के प्रशिक्षण के कारण होता है) तथा प्राणी जिसे कम-से-कम कुछ समय तक धारण किए रहता है" (Some modification in the behaviour of the organism as a result of experience (due to some sort of training) which is retained for at least certain time by the organism)।

8. मैक्गू (McGeoh)—"सीखना—जैसाकि हम मापते हैं, व्यवहार में अभ्यास के फलस्वरूप अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को कहते हैं। अधिकतर अवसरों पर इस प्रकार के परिवर्तन की एक दिशा होती है जो व्यक्ति के तात्कालिक प्रेरणात्मक अवस्थाओं की संतुष्टि करता है।" (Learning, as we measure it, is a relatively permanent change in behaviour as a function of practice. In most cases, this change has direction which satisfies the current motivating conditions of the individuals)।

उपर्युक्त गतिवाही (motor) एवं वाचिक (verbal) कौशलों को सीखने के क्रम में मनुष्य में अनेक प्रकार की समस्याओं के समाधान की योग्यताओं का भी विकास होता है। प्रारंभ में हम केवल साधारण समस्याओं का समाधान करना सीखते हैं; यथा—सही रास्तों को ढूँढना, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों से बचना, दूसरों से मिलना-जुलना, रहन-सहन के तौर-तरीके, उठना-बैठना, बोलना-चालना इत्यादि। इस तरह, धीरे-धीरे सरल समस्याओं के समाधान से क्रमशः जटिल समस्याओं का समाधान करना तथा वैज्ञानिक आविष्कार, यंत्रों और उपकरणों का निर्माण आदि का शिक्षण होता है। जटिल समस्याओं के समाधान के शिक्षण में चिंतन प्रक्रिया एवं उच्चस्तरीय प्रशिक्षण (higher level training) आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

उपर्युक्त बातों के अलावा हम अपने बारे में तथा आसपास के वातावरण के बारे में आवश्यक सूचनाओं को भी अर्जित करते हैं। इन सूचनाओं की सहायता से विभिन्न प्रकार के कौशल-अर्जन की प्रक्रिया एवं समस्या-समाधान की प्रक्रिया में मदद मिलती है। हम अपने दैनिक जीवन में बहुधा यह अनुभव करते हैं कि विभिन्न समस्याओं के समाधान पर विचार करते समय उससे संबंधित कुछ सूचनाओं को एकत्र करते हैं। इन सूचनाओं की सहायता से उपस्थित समस्या का हल ढूँढ़ने में सुविधा होती है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि शिक्षण-क्रिया में साधारण शिक्षण से लेकर विभिन्न प्रकार की गतिवाही एवं वाचिक कौशलों के अर्जन, समस्याओं का समाधान एवं सूचनाएँ एकत्र करने तक की अनेक जटिल-से-जटिल क्रियाओं को करना सीखते हैं। इन क्रियाओं के सीखने के फलस्वरूप व्यक्ति अपने को वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों के साथ सामंजस्य या अभियोजन करना सीखता है। इसी क्रम में मनुष्य द्वारा किसी क्रिया को किस प्रकार सीखा जाता है—यह भी सीखता है (He also learns how to learn)। इससे आगे सीखने की संभावना और अधिक प्रबल हो जाती है।

सीखने की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF LEARNING)

सीखने की क्रिया के संबंध में ऊपर जो वर्णन किया गया है, उसे और अधिक स्पष्ट करने हेतु इसकी कुछ परिभाषाओं (definition) की व्याख्या उपयुक्त प्रतीत होती है। जैसाकि ऊपर वर्णन किया गया है, सीखना एक अत्यंत ही व्यापक और जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। अतः, इस जटिल प्रक्रिया की संक्षिप्त परिभाषा देना कठिन है। फिर भी, हम निम्नलिखित कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं (definitions) पर विचार करेंगे—

1. मन (Munn)—"सीखने को परिमार्जन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो लगभग स्थायी होती है तथा यह परिमार्जन हमारे आसपास के वातावरण में होनेवाली घटनाओं द्वारा अथवा हम जो करते हैं या निरीक्षण करते हैं, उसके द्वारा होती है" (Learning can be defined as the process of being modified, more or less permanently, by what happens in the world around us, by what we do, or by what we observe)।

2. मॉर्गन एवं किंग (Morgan, C. T. & King, R. A.)—"व्यवहार-संबंधी किसी भी अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन जो अनुभव अथवा प्रयास के फलस्वरूप होता है—को सीखना कहते हैं" (Any relatively permanent change in behaviour which occurs as a result of experience or practice)।

स्वरूप एवं महत्त्व
(NATURE & IMPORTANCE)

प्रत्येक प्राणी में जन्म के समय से ही कुछ जन्मजात कार्यक्षमताएँ विद्यमान रहती हैं। फलस्वरूप, वह कुछ सरल शारीरिक प्रतिक्रियाएँ करता है। लेकिन, वातावरण के साथ अभियोजन स्थापित करने हेतु उसे कुछ-न-कुछ सीखना पड़ता है। इस प्रकार, जन्मोपरांत वातावरण के संपर्क से प्राणी अपनी जन्मजात शारीरिक कार्यक्षमता को बढ़ाता है। इस क्रम में वह कुछ नई प्रतिक्रियाएँ करना सीखता है अथवा अपनी किसी प्रतिक्रिया में अभियोजन के योग्य बनाने हेतु संशोधन या परिवर्तन लाता है। इसे ही **सीखना** (learning) कहते हैं।

प्राणी की संपूर्ण प्रतिक्रियाओं को अनसीखी एवं सीखी हुई—दो प्रकार की प्रतिक्रियाओं में बाँटा जा सकता है। अनसीखी प्रतिक्रियाओं के अंतर्गत प्राणी की वंशगत जैविक (inherited biological) प्रतिक्रियाओं को रखा जाता है; जैसे—मूल प्रवृत्तियाँ (instincts), सहज क्रियाएँ (reflex actions), स्वाभाविक शारीरिक विकास से संबद्ध क्रियाएँ आदि। इन प्रतिक्रियाओं के

अतिरिक्त प्राणी के अन्य सभी प्रकार के व्यवहार को अर्जित या सीखी गई प्रतिक्रिया कहते हैं। प्राणी की ये प्रतिक्रियाएँ वंशगत नहीं होतीं, बल्कि इन्हें प्राणी जन्म के बाद वातावरण में अपने अनुभव या अभ्यास द्वारा अर्जित करता है। इसे ही **सीखना** या **शिक्षण** या **अधिगम** कहते हैं।

महत्त्व—सीखना प्राणी के लिए और खासकर मनुष्य के लिए बहुत अधिक महत्त्व रखता है। सीखने की क्रिया के महत्त्व को स्पष्ट करने हेतु हम एक पूर्वकल्पना (presupposition) करें। कल्पना करें कि एक ऐसी औषधि का आविष्कार होता है, जिसके खाने से मनुष्य की सभी सीखी गई प्रतिक्रियाएँ (responses) नष्ट हो जाती हैं, लेकिन शारीरिक अवस्था पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इस तरह की स्थिति में पूर्णरूप से विकसित व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व, उसकी प्रतिक्रियाएँ, अर्थात क्रियाकलाप बच्चों जैसी हो जाएँगी। वह नादान बच्चे की भाँति मात्र हाथ-पैर हिला सकेगा। उसमें चिंतन, प्रत्यक्षीकरण, कार्य करने का कौशल, संवेगों पर नियंत्रण आदि क्रियाएँ नहीं होंगी। इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाएगा। अस्तु, स्पष्ट है कि सीखना व्यक्ति के जीवन में अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

सीखने की क्रिया की महत्ता को देखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि मनुष्य क्या सीखता है—इस पहलू पर विचार कर लिया जाए। मनुष्य के संपूर्ण जीवन में सीखने की क्रिया सर्वाधिक व्यापक है। इसकी व्यापकता को ध्यान में रखते हुए ही अनेक मनोवैज्ञानिक और खासकर व्यवहारवादियों ने 'सीखना' को मनोविज्ञान का एक केंद्रीय विषय माना है। इस दृष्टिकोण को माननेवालों के मतानुसार प्राणी की सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाएँ शिक्षण-क्रिया से प्रभावित एवं निर्धारित होती हैं। यह क्रिया जन्म के तुरंत बाद प्रारंभ होती है और जीवनभर चलती रहती है। प्रारंभ में जन्म के समय शिशु अपने वातावरण के कुछ थोड़े-से तात्कालिक पहलुओं (a few immediate aspects of his environment) के प्रति प्रतिक्रिया कर पाता है; जैसे—भूख लगने पर माँ की छाती को चूसना, माँ द्वारा अथवा परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा गोद में उठाने हेतु रोना अथवा किसी कष्टप्रद उत्तेजना को देखकर पीछे लौटने जैसी सरल क्रियाओं को करता है। परंतु, इन सरल एवं सहज क्रियाओं को भी अनुभव द्वारा परिमार्जित किया जाता है जिस कारण इन्हें सरल शिक्षण की श्रेणी में रखा जाता है और ऐसे सरल शिक्षण को मनोविज्ञान की भाषा में अनुकूलन प्रतिक्रिया (conditioned response) की संज्ञा दी जाती है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था में हम अनेक प्रकार के गतिवाही कौशलों (motor skills) को अर्जित करते हैं। **उदाहरण के लिए,** बाल्यावस्था में किसी वस्तु तक पहुँचने, उसे पहचानने या समझने आदि का प्रयास करना, बिना किसी सहारे के खड़ा होने या चलने का प्रयास, कपड़े पहनने, बटन लगाने आदि साधारण गतिवाही क्रियाओं को सीखा जाता है। इस प्रकार, कौशल-अर्जन की प्रक्रिया का प्रारंभ साधारण गतिवाही क्रियाओं से होता है और जैसे-जैसे हम जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ते जाते हैं, अनेक प्रकार के जटिल कौशलों; यथा—गाड़ी चलाना, हवाई जहाज चलाना, जटिल यंत्रों को संचालित करना आदि सीखते हैं।

गतिवाही कौशलों के अतिरिक्त हम वाचिक क्रियाएँ (verbal activities) करना भी सीखते हैं। प्रारंभ में तो हम अत्यंत ही सरल शब्दों, वस्तुओं या हाव-भाव में अर्थों को सीखते हैं। लेकिन, जैसे-जैसे हमारा विकास होता जाता है, अनेक शब्दों को बोलना, लिखना, वाक्यों का निर्माण करना आदि जटिल वाचिक कौशलों को अर्जित (acquisition of complex verbal skills) करते जाते हैं।

9. वुडवर्थ (Woodworth)—"कोई भी क्रिया जो व्यक्ति को अच्छे या बुरे किसी भी रूप में विकसित करता है तथा जो उसके बाद में होनेवाले व्यवहार को जैसा कि वे हो सकते थे उससे भिन्न बनाता है, को सीखना कह सकते हैं" (Any activity can be called learning in so far as it develops the individual in any respect—good or bad; makes his later behaviours different from what they would have been)।

उपर्युक्त प्रायः सभी परिभाषाओं में सीखने को 'विकास की एक प्रक्रिया' (process of development) माना गया है। विकास की इस प्रक्रिया की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ (characteristics) होती हैं।